रात्रि क्लास 17/11/68:– तुम बच्चों को कैसी नई-2 बातें बाप सुनाते हैं। बाप भारत में ही आते हैं। भारत में ही बच्चों को पढ़ाते हैं और अपनी पहचान देते हैं कि इस झाड़ का बीज रूप मैं हूँ। सभी आत्माओं का बाप हूँ। बीज रूप ही ठहरा। तो बाप होने की हैसियत में बाप वर्सा देते हैं और यह भी सिद्ध होता है बाप से वर्सा मिलता है। यह नहीं समझते हैं कि रावण से श्राप मिलता है। भक्तिमार्ग में भी कहते हैं बाबा आप आवेंगे तो सौदा करेंगे। बहुत सौदा खुशी से भी करते हैं। कोई तंग दिल हो लाचार सौदा करते हैं। बाप से सौदा करने वाला बहुत बहादुर चाहिए; क्योंकि वीरता दिखलानी है ज़रूर। ब्राह्मण की माला करैक्ट बन नहीं सकती है; क्योंकि पिछाड़ी तक लड़ाई चलती रहती है। पिछाड़ी में लड़ाई भी क... होती है तो ज़रूर हराते होंगे। समझ में आता है हरा सकते हैं। माला बनती ज़रूर है। जो फिर भी भक्ति फेरी जावेगी। वहाँ तो खुद देवताएँ हैं। पूज्य हैं। वह तो अपनी माला नहीं फेरेंगे। पुजारी माला फेरते हैं। फिर पिछाड़ी पूज्य बनेंगे। वास्तव में जबकि सृष्टि का अंत होता है तो एक ही बाप जो कि टीचर भी है, गुरु भी है, वह सहज याद पड़ता होगा। ऐसे कोई मनुष्य अपन को बाप, टीचर, गुरु कह न सके। इस हिसाब से शिवबाबा बहुत याद पड़ना चाहिए; परंतु माया इतनी सहज बात भी भुला देती है। माया का धंधा ही है भुलाना। इसलिए इसका नाम भी भूलभुलैया रख दिया है। शोभता भी अभी है। बाप कहते हैं तुम मुझे याद करो। माया भुला देती है। माया का मुख्य धंधा है याद भुलाना। वह बाप का बने फिर माया अपना बना लेती है। माया बड़ी जबरदस्त है। राजाई भी इस रावण की ही चलती है। रावण हराती है तो राम सम्प्रदाय की जीत होती है। अभी तुम बच्चों की बुद्धि में है। शास्त्रों में तो बहुत रांग बातें लिख दी हैं। समझाना पड़े ना। गीता में जो युद्ध दिखाया है असुरों और देवताओं की या कौरवों और पाण्डवों की युद्ध। यह हुई नहीं .....

समझाते हो; परंतु किसकी बुद्धि में बैठता ही नहीं जो अखबार में डाले। राम रावण वा राम के बच्चों आदि की युद्ध लगी नहीं है। यह ग्लानि की बातें हैं। सीता की कड़ी ग्लानि है यह। बातें मानने लायक नहीं हैं। हम ऐसी बातें सुनना पसंद नहीं करते हैं। ऐसे समझाओ तब सभा में भाषण आदि करे। तो कहेंगे यह तो राइट है। ऐसी-2 दंत कथाओं से हम सभी बुद्धि भ्रष्ट हो गई है। तुम्हारा नाम बाला ज़रूर होना है। आते तो बहुत ही हैं ना। ऐसे-2 बैठ समझाओ। हियर नो ईविल..... बोलो, यह नुकसान करने वाली ईविल बातें हैं। देवताओं की ग्लानि है। भगवानुवाच ऐसी ग्लानि जब होती है तो बाप ही आकर बतलाते हैं यह अति धर्म की ग्लानि है। ऐसी-2 प्वाइंट्स बुद्धि में हो जो समय पर दे पक्का कराया जाये। आगे चल बहुत ही सुनेंगे, सुनने का है ज़रूर। बहुत हो जावेंगे तो फिर झट मानेंगे। और जो भी झूठी बातें मुख्य-2 हैं बड़े-2 बोर्ड पर लिख दो। बाबा ने कहा था वाह्यात बातें सभी लिखो। यह सभी बातें सुनने से भारत पतित हुआ है। पावन बनाने वाला बाप ही है। वही कहते हैं मुझे याद करो तो पाप भस्म हो जायें। यूँ भी तुम बच्चों को यही समझाना है। मुख्य बात है यह। तुम पैगाम देते हो भगवानुवाच अपन को आत्मा समझ देह के सभी संबंधों को तोड़ मामेकं याद करने से सभी पाप भस्म हो जावेंगे और सृष्टि चक्र को याद करने से सतयुगी हेविन के मालिक बन जावेंगे। ऐसे-2 अक्षर एड कर बहुत अच्छा करके बनाना है। मुझ अपने बाप को निरंतर याद करो। याद करने से वर्सा पा लेंगे ड्रामा प्लैन अनुसार होवनहार विनाश के पहले। बाबा कहते तो हैं। टिन पर लिखकर बड़े-2 स्थानों पर लगाओ। एक तरफ मनुष्य, एक तरफ देवताएँ। पहले लिखकर इस तरफ मनुष्य, उस तरफ देवता। ऐसे कुछ न कुछ लिखकर बड़े-2 म्युज़ियम में बोर्ड लगा दो। यह है मुख्य बात। अपन को आत्मा समझ देह के सभी संबंधों को छोड़ मामेकं याद करो तो तुम सद्गति को पावेंगे कल्प पहले मिसल। ऐसे-2 बोर्ड बड़े-2 स्थानों पर लगा दो। बाबा ऐसे-2 बताते तो बहुत ही हैं। जैसे ट्राम बस में भी लगाते हैं। यह लगावें तो अच्छा है। बड़े-बड़े जंक्शन पर

बड़े-2 बोर्ड हों। यह है मूल मंत्र। बच्चे लिखकर सामने ले आवें तो टीचर भी आफरीन देंगे। अच्छे-2 सेंसीबुल बच्चे लिख सकेंगे। बाकी के लिए समझेंगे इतना सेंस नहीं है। नहीं लिख सकते हैं। बाबा लिख देंगे मोस्ट प्रॉमिनंट जगह पर रखो तो समझेंगे। यह बातें अखबार में भी लगा सकते हैं। तुम बच्चों को भी एपरेटेड(अप्रीशिएट) करेंगे। यह मूल बात है जो गीता में भी है। हम लिखते तो हैं गीता ज्ञान दाता शिवभगवानुवाच तो बहुतों के नज़र जावेंगी। समझेंगे यह तो गीता ही है। तुम्हारे पास तो देवताओं के भी बहुत चित्र हैं। तुम समझाते हो असली चीज़ पर। जिसको मनुष्यों ने नकली बनाये दिया है। स्थापना के चरित्र सभी भगव.... के हैं। एक्युरेट टोटके लिखने से एप्रीटेड(अप्रीशिएट) करेंगे। विनाश का समय जब नज़दीक आवेगा तो फिर इन बातों पर ज़ोर करेंगे। आगे चल बहुत ऐसे निकलेंगे जो तुम्हारे साथ टोली खावेंगे। ब्रह्माकुमारियों का नाम बाला तो होना ही है। समझ जावेंगे बरोबर इन्हों को परमपिता शिव परमात्मा पढ़ाते हैं। ज्ञान का सागर ही यह ज्ञान देते हैं। ज्ञान का सागर कृष्ण को नहीं कहा जाता है। कल्प-कल्प ऐसी युक्तियाँ रचते आये हैं। यह तो निश्चय है तुम बच्चे अपना राज्य स्थापन कर ही दिखावेंगे। बाप भी है ना। बच्चे कहते हैं बाबा हम भी आपके मददगार बनते हैं। जो मददगार बनेंगे वही वर्सा पावेंगे राजधानी का। जैसे जो मदद करेंगे वैसे ही वर्सा पावेंगे।

पाण्डव गवर्मेंट कब कौरव गवर्मेंट से कब भीख नहीं मांग सकती है। वह तो भीख मांगने आते ही हैं। दिन-प्रतिदिन भीख जास्ती मांगते रहते हैं। चंदा इक्ट्ठा करते रहेंगे। भीख तो चलती रहेगी। अच्छा, मीठे-2 रूहानी बच्चों को रूहानी बाप दादा का यादप्यार गुडनाइट रूहानी बच्चों को रूहानी बाप का नमस्ते।